International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 163-164

भारतीय सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षिण चीन सागर विवाद

डॉ0 आशीष धर त्रिपाठी

विकास अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

चीन के दक्षिण में स्थित दक्षिण चीन सागर एक सीमान्त सागर है। यह छः सीमान्त सागरों में से सबसे बड़ा सागर है जो एशिया की मुख्य भूमि और तटीय द्वीप समूहों के परकोटा के मध्य में स्थित है। यह प्रशान्त महासागर का एक हिस्सा है और दक्षिण पश्चिम में सिंगापुर का एक क्षेत्र और मालक्का की जल संधि और उत्तर पूर्व में ताईवान जलसंधि है। पांच महासागरों के पश्चात यह सबसे बड़ा जलीय भाग है। इन्टरनेशनल हाइड्रोग्राफिक ब्यूरो के अनुसार दक्षिण चीन सागर एक जलीय भाग है और यह दक्षिण पश्चिम से लेकर उत्तर पूर्वी दिशा में फैला हुआ है, यह दक्षिण में दक्षिण सुमात्रा और कालीमन्तन (कालीमाता जल सन्धि) के बीच 3 डिग्री दक्षिण अक्षांश पर स्थित हैं, ताइवान की जलसन्धि के उत्तर और ताइवान के उत्तरी छोर से लेकर चीन के फ्यूकीन तट पर स्थित है। यह संसार के दस तेजी से बढ़ रहे देशों से घिरा हुआ है, यह उत्तरी प्रशान्त और हिन्द महासागर के बीच फैला व्यस्त समुद्री मार्ग है।

उत्तरी दिशा से दक्षिण की ओर जाते हुए दक्षिण चीन सागर से लगने वाले देश और क्षेत्र है : चीन गणराज्य, मकाऊ फिलीपीन्स, मलेशिया, ब्रूनई, इण्डोनेशिया, सिंगापुर, थाईलेण्ड, कम्बोडिया और विएतनाम। यें देश एक दूसरे से बहुत ही भिन्न है। इस क्षेत्र के आस पास के देश छोटे भी है जैसे सिंगापुर और बड़े भी है जैसे चीन। इन देशों की जनसंख्या, शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद और राजनैतिक व्यवस्थाओं में भी काफी अन्तर है। और यह समुद्र इन तटीय राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

साऊथ चाईना सी का विस्तार मसलन 8,00,000 स्क्वायर किमी0 तक है। इसके समुद्री ठिकानों पर तकरीबन एशिया के महत्वपूर्ण देशों का ठिकाना हैं या कई शक्तिशाली देश स्थित है। फिलीपिंस, मलेशिया, ब्रुनई, इंडोनेशिया, सिगापुर और थाईलैण्ड, कंबोडिया, वियतनाम, और चीन इसके महत्वपूर्ण सदस्य है। इस तट के ईद–गिर्द बसे देशो ंका मुख्य आहार मछली है। भारत का 55 प्रतिशत व्यापार इसी समुद्री रास्ते से होता है। महत्वपूर्ण देशों के लिए भी यह रूट व्यापार का मुख्य मार्ग है। इस क्षेत्र में वर्चस्व के संघर्ष के पीछे दो महत्वपूर्ण कारण है। पहला आर्थिक है। इसके अन्तर्गत ऊर्जा और तेल के नए क्षेत्रों की खोज और उसका व्यापार करना महत्वपूर्ण माना जा सकता है। दूसरा, संप्रभुता की लड़ाई है। हर देश अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री कानून को ताक पर रखकर अपनी मनमानी करना चाहते है। इस मुहिम में चीन अपनी शक्ति और सैनिक ताकत के कारण सबसे आगे है। मुख्यतः साऊथ चाईना के अन्तर्गत ताईवान स्ट्रेट जो उत्तरी मुहाने पर है और मल्लका स्ट्रेट पूरी दुनिया को समुद्री मुहाने से जोड़ते है। इस कारण तकरीबन इनके इर्द–गिर्द देशों की आपस में रस्साकसी चल रही है। सिंगापुर और मलेशिया के बीच पिसांगद्वीप और पुलाऊबाटू पुतेह द्वीप जो मल्क्का स्ट्रीट से सटे हुए हैं, को लेकर संप्रभुता की लड़ाई चल रही है। चीन, वियतनाम और ताईवान पारशेल जिसके अन्तर्गत तकरीबन 15 द्वीप है, को लेकर मालिकाना हक की लड़ाई वर्षों से चल रही है। 1974 में चीन ने इन द्वीपों पर जबरन अपना झण्डा गाड़ दिया। इसके बावजूद वियतनाम अपनी जिद पर अड़ा हुआ है। दूसरी तरफ ताईवान भी संघर्ष की होड़ में है। इस पूरे तटवर्ती इलाकों में 52 से ज्यादा द्वीप है। जिसमें से चीन का अधिपत्य 7 पर है। वियतनाम के कब्जे में 40 से ज्यादा द्वीप है। फिलिपिंस के हक में 9 और शेष मलेशिया और ब्रुनई के प्रभाव में है।

भारत ने अक्टूबर और नवम्बर 2000 में दक्षिण चीन सागर में द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सैनिक अभ्यास किए। पांच महायुद्ध पोतों के शक्तिशाली नौ सेवा बेड़ों (आई0एन0एस0) दिल्ली, आई0एन0एस0 कोरा, आई0एन0एस0 सिन्धुवीर, आई0एन0एस0 राजपूत और आई0एन0एस0 कुठार) एक पनडुब्बी और एक टैंकर (आई0एनएस0 आदित्य) ने दक्षिण चीन सागर में प्रवेश करके अभ्यास किया। भारतीय नौ सेना ने मैत्री सम्बन्ध दर्शाने के रूप में जापान, दक्षिण कोरिया, इण्डोनेशिया और विएतनाम को द्विपक्षीय अभ्यासों के लिए युद्धपोतों, टैंकरों और पनडुब्बियों को भेजा। दक्षिण चीन सागर में 2004 में भारतीय इकाइयों के द्वारा चीन अलग अलग बार प्रवेश किया गया। मई में दक्षिण चीन सागर में मलक्का से लेकर सुण्डा जलसन्धि तक 'निगरानी–कम–कम उपस्थिति अभियान" के लिए आई0एन0एस0 राणा,आई0एन0एस0 खुकरी, आई0एन0एस0 रणबीर, आई0एन0एस0 कोरा और आई0एन0एस0 उदयगिरी को तैनात किया गया। इसी प्रकार से अगस्त माह के दौरान मालका जल सन्धि और दक्षिण चीन सागर में आई0एन0एस0 सावित्री द्वारा ऐसी ही निगरानी कम उपस्थिति की कार्यवाही की गई। अंत में अक्टूबर–नवम्बर में भारत ने अपनी सामुद्रिक क्षमता की अधिक संभावना को दिखाने के लिए दक्षिण चीन सागर में एक अन्य महत्वपूर्ण ढंग से दक्षिण चीन सागर में प्रवेश किया किया।

इन पांच जल पोतों में से दो काशिन वर्ग के मिसाइल को नष्ट करने वाले रणजीत और रणविजय थे, एक स्वदेशी मिसाइल वाहक जलपोत गोदावरी, एक तट से दूर गश्त करने वाला जलपोत सुकन्या और एक स्वदेशी मिसाइल कोर्विट क्रिच था। भारतीय विश्लेषकों ने इसे सामरिक महत्व के दक्षिण चीन सागर में स्वयं की बड़ी भूमिका के लिए व्यापक हितों पर चलने की अपनी सामुद्रिक सुरक्षा आवश्यकताओं को बढ़ाने के लिए शक्ति दिखाने के लिए अभ्यास के रूप में देखा। इन पोतों का यह दौरा लगभग उसी समय हुआ था जिस समय दक्षिण चीन सागर में चीन की जल सेना ने आस्ट्रेलिया की जल सेना के साथ संयुक्त अभ्यास किए थे। फरवरी– मार्च 2005 में दक्षिण चीन सागर में बहुत–सी भारतीय ईकाइयां देखने को मिली। काशिन वर्ग के मारक क्षमता वाले आई0एन0एस0 राजपूत और आई0एन0एस0 रणविजय, जलपोत आई0एन0एस0 गोमती, भारत में बना कोर्विट आई0एन0एस0 कोरा और आई0एन0एस0 करमुक और नौसेना टेंकर आई0एन0एस0 ज्योति से बने सशक्त भारतीय बेड़े ने सिंगापुर की ईकाइयों के साथ सिमबेक्स 2005 अभ्यासों में भाग लिया। अप्रैल 2007 में भारत के पांच जलयान बेड़े दक्षिण चीन सागर होते हुए सुदूर पूर्व में भू क्षेत्र से दूर अभ्यास के लिए गए। 25 मार्च 2011 में, भारत ने दक्षिण चीन सागर में चीन की सामुद्रिक सीमा के साथ सिंगापुर की नौसेना के साथ आठ दिन की युद्ध क्रीड़ा का अभ्यास किया। सिंगापुर की नौ सेना ने तीन जलपोतों, एक मिसाइल कार्विट एक

पनडुब्बी और एक समुद्र में गश्त करने वाला वायुयान को तैनात किया। सिंगापुर की वायुसेना ने यहां लड़ाकू विमान भी तैनात किए। भारत ने इस अभ्यास में अपने तीन ध्वंसक पोत एक कार्विट आरैर एक बेड़ा टेंकर और एक समुद्र में गश्त करने वाला वायुयान भेजे। यह अभ्यास दो चरणों में था। मई 2017 में इसी प्रकार का एक नवल युद्ध अभ्यास सिम्बेक्स किया गया चीन ने इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि इस प्रकार के आदान प्रदान और सहयोग क्षेत्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए किए जाने चाहिए। साथ ही इसमें भाग लेने वाले देशों को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि उनके किसी कृत्य से अन्य देश के हित न प्रभावित हो जो कि क्षेत्रीय शांति और स्थायित्व पर नकारात्मक असर डाले।

भारत को यह आशा है कि वह अपने दक्षिण पूर्वी एशिया के पड़ोसियों को यह संदेश दे सकता है कि वह चीन के दावों को चुनौती दे सकता है और स्वयं को चीन के प्रतितोलक के रूप में दिखा सकता हैं भारत ने सोच समझकर एक उच्च संयुक्त नौ सेना अभ्यास सम्भवतः इसलिए किया ताकि बीजिंग को यह संदेश जाए कि नई दिल्ली के पास चीन के परम्परागत सामरिक क्षेत्र का अतिक्रमण करने की योगयता है। इन दौरों और अभ्यासों का एक अन्य स्पष्ट परिणाम द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाना और व्यापक व्यावसायिक सम्बन्ध के द्वारा नौ सेना सम्बन्धों को गति प्रदान करना है। इनके द्वारा भारत को इस क्षेत्र में अपनी स्वेदशी पोत निर्माण की क्षमता को दर्शाने का अवसर भी मिला है। एशिया के देश भी भारत की बढ़ती हुई समुद्री शक्ति को उत्सुकता से देख रहे है। चीन दक्षिण चीन सागर में भारत के एक पक्षीय व अन्य देशों जैसे विएतनाम के साथ नौ सेना अभ्यासों को चिन्ता और झुंझलाहट के साथ देख रहा है। भारत हिन्द महासागर से बाहर आ रहा है। परम्परागत ढंग से इस महासागर का समुद्री जल उसकी कार्यवाहियों का क्षेत्र रहा है। भारत, मलेशिया और इण्डोनेशिया को पार करके प्रशान्त में जा रहा है। विएतनाम में अड्डा हो या न हो, मगर दक्षिण चीन सागर में अड्डा की स्थापना से दक्षिण पूर्व एशियाई सुरक्षा पर काफी गहरा प्रभाव पड़ेगा और इस तरह से भारत, चीन और अमेरिका के साथ सम्बन्धों को लेकर इण्डोनेशिया, मलेशिया और साथ ही थाईलैण्ड फिर से विचार करने के लिए बाध्य होगे। दक्षिण पूर्व एशिया में भारत के एक सामरिक देश के रूप में उभरने से आसियान को आस्ट्रेलिया के स्थान पर भारत से एक महत्वपूर्ण सैन्य सहायता की संभावना उपलब्ध रहेगी यह मदद आस्ट्रेलिया अमेरीकी की सहायता से दे रहा था।

सुरक्षा क्षेत्र के इस क्षेत्र में भारत का चीन के प्रभाव से आशक्ति देशों से सहयोग करने से अन्य उद्देश्यों के अतिरिक्त दो मुख्य उद्देश्यों की पूर्ति होगी। प्रथम, इससे चीन पर नियंत्रण लगाने में मदद मिलेगी, भारत ऐसा अकेला नहीं कर सकता है, परन्तु करने का अत्यधिक इच्छुक है। दूसरे, इससे भारत अमेरीका व इसके नाटो सहयोगियों के निकट आ जाएगा। इसके अतिरिक्त सुरक्षा मामलों को लेकर दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों की भारत पर निर्भरता को बनाना है। भारत की भू–राजनैतिक विस्तार की महतवकांक्षा और इसकी आर्थिक संभाव्यता से तेल आपूर्ति के लिए चीन व भारत एक दूसरे के प्रतियोगी बन सकते है। दीर्घ अवधि में भू राजनैतिक प्रतियोगिता के खतरे को देखते हुए लघु अवधि के लिए इन देशों की सापेक्ष आर्थिक उपलब्धियों को बढ़ाने की इच्छा बलवती हो सकती है। इस सन्दर्भ में दक्षिण पूर्वी एशिया में चीन और भारत के बीच टकराहट अवश्यंभावी है।

विवाद में शामिल छः देशों का विश्वास है कि उनकी आर्थिक सुरक्षा द्वीप समूहों के संसाधनों को प्राप्त करने पर निर्भर है। इस परिस्थिति में तेल को एक जीरो–सम संसाधन के रूप में देखा गया है। यह सीमित मात्रा में उपलब्ध है और किसी एक देश द्वारा अगर इसका दोहन किया जाता है, तब कोई अन्य देश इनका प्रयोग नहीं कर सकता है। तेल क्षेत्रों को आसानी से बांधा नहीं जा सकता हैं, दोहन कर रहा एक देश अन्य देशों के भण्डार को नष्ट कर सकता है। ऐसी स्थिति तब उभरी जब इराक ने द्वितीय खाड़ी के एकदम पहले ही कुवैत पर अपने तेल को चुराने का आरोप लगाया था।

दक्षिणी चीन सागर के क्षेत्र में सामुदायिक भावना का विकास होना चाहिए। संयुक्त विकास की अवधारणा पर अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। इसके लिए संरक्षणात्मक कूटनीति की आवश्यकता है। अंत में, विवाद के न सुलझ पाने के कारण यह दक्षिण चीन सागर एक अराजकता का क्षेत्र बन गया है। विभिन्न दा वेदार देश न केवल सीमाओं का समाधान करने में असवफल रहे हैं बल्कि मछली पकड़ने और समुद्र के भीतर के संसाधनों का दोहन, समुद्री लुटेरों पर नियंत्रण करने में भी असफल रहे है। जब तक क्षेत्र की शक्तियां विवाद को सुलझाने के लिए सहमत नहीं हो जाती है तब तक विवाद में कमी नहीं आ पाएगी।

भारत को दक्षिण चीन सागर व इसके आगे पूर्वी दिशा की ओर चीन की समुद्रिक सीमा में अपनी सामुद्रिक उपस्थिति दर्ज करने के लिए सुदृढ़ नौ सेना की आवश्यकता है। भारत दक्षिण चीन सागर में दृढ़ता से कार्यवाही का क्षेत्र का विस्तार करके प्रत्यक्ष रूप से चीन को चुनौती देगा। चीन इस सम्पूर्ण क्षेत्र पर एक क्षेत्रीय जल के रूप में अपना दावा करता है। भारत की यह चुनौती इस क्षेत्र में नौ सेना शक्ति की ओर नई दिल्ली और बीजिंग के बीच तनावों के बढ़ने को फिर से परिभाषित करेगी। चीन की भविष्य की स्थिति के बारे में पूर्वानुमान लगाना काफी कठिन कार्य बना हुआ हैं चीन की इस अज्ञात विशेषता से चीन की दक्षिण चीन सागर में रेंगकर चलने पर एक दृष्टि रखने का अवसर प्राप्त होता है और जैसे ही भारतीय नौ सेना अपनी रूपरेखा को फिर से परिभाषित करने के लिए आगे बढ़ेगी वैसे ही उसका चीन के साथ संघर्ष और प्रतियोगिता और अधिक अस्थायी हो जाएगी।

References

1. David Scott, India's drive for a Blue Water Navy, Journal of Militry and Strategic Studies, winter 2007-08, 10(2).
2. Vishal Thapar, Navy Deploys Warships in South China Sea, Hindustan Times, 2004.
3. Zhao Hong. India and China: Rivals or Partners in Southeast Asia?" Contemporary Southeast Asia. 2007; 29(1):130.
4. Mark Valencia J, Jon Dyke M, Noel A. Ludwig, Sharing the Resource of the south china Sea, Honolulu: University of Hawaii Press, 1997, 25.
5. Sridharan K. The ASEAN Region in India's Foreign Policy, Dormouth; Aldershot, 1996.